

आचार्य श्री रजनीश के शिक्षा सम्बन्धी विचारों का अध्ययन

Ashwani Kumar Yadav

Research Scholar

Sunrise University Alwar Rajasthan

Dr.Ritu Bhardwaj

Supervisor

Sunrise University Alwar Rajasthan

सार—

‘ओशो’ यह शब्द विलियम जेम्स के शब्द ‘ओशोनिक’ से लिया गया है जिसका अभिप्राय है सागर में विलीन हो जाना। ऐतिहासिक रूप से सुइर पूर्व में भी ‘ओशो’ शब्द प्रयुक्त होता रहा है। जिसका अभिप्राय है : भगवत्ता को उपलब्ध व्यक्ति, जिस पर आकाश फूलों की वर्षा करता है। यह शब्द ‘आचार्य श्री रजनीश’ को उनके प्रेमियों ने नाम के रूप में दिया है। अनुसंधानकर्त्ता ने भी इसी अर्थ में प्रयोग किया है—‘प्रेमभाव के साथ।’ आचार्य श्री इसका प्रयोग शोधकर्त्ता ने श्री रजनीश के लिये ही किया है लेकिन सम्मान भाव में। ‘सम्यक शिक्षा’ इसका अर्थ ओशों की आदर्श शिक्षा से है यानि ऐसी शिक्षा जैसी ओशों चाहते हैं कि सुखी आदमी पैदा करें।

प्रस्तावना—

शिक्षा क्या है ? इस सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों के अलग-अलग विचार हैं। सुकरात, एडीसन, फ्रोबेल और गॉंधी आदि शिक्षा को जन्मजात व्यक्त करने की प्रक्रिया मानते हैं। टी०पी०नन, पेस्टालॉजी, कान्ट टैगोर आदि शिक्षा की वैयक्तिकता में पूर्ण विकास के रूप में देखते हैं। हार्न, वासिंग, जम्स बटलर और रेमांट आदि विद्वान शिक्षा को वातावरण से सामन्जस्य स्थापित करने वाली प्रक्रिया के रूप में स्वीकार करते हैं। यहाँ इस बात पर विचार किया जायेगा कि ओशों के दृष्टिकोण से शिक्षा क्या है ? क्या वर्तमान शिक्षा में कुछ कमी है ? ओशो की सम्यक शिक्षा की अवधारणा क्या है ?....शिक्षा क्या है ? इस सम्बन्ध में ओशो कहते हैं —“शिक्षा का एक ही अर्थ है, कि हम जीवन की कला सीख सकते हैं।”

इस बात को वे एक कहानी के द्वारा समझाते हैं—“एक घर में बहुत दिनों से एक वीणा रखी थी। उस घर के लोग भूल गये थे उस वीणा का उपयोग। पीढ़ियों पहले कभी कोई उसको बजाता रहा होगा। वह वीणा एक उपद्रव का कारण हो गयी थी। अतः उस घर के लोगों ने तय किया कि वीणा को फेंक दे। वह लौट भी नहीं पाये थे कि एक भिखारी गुजरता था, उसने वह वीणा उठा ली और उसके तारों को छेड़ दिया। वे ठिठककर खड़े हो गये।..... उस रास्ते के किनारे जो भी निकले, वह ठहर जाये। वहाँ भीड़ लग गयी। भिखारी मन्त्रमुग्ध हो वीणा को बजाता रहा। जब उन्हें स्वर संगीत मालूम पड़ा, घर के लोग उस भिखारी से बोले—वीणा हमें लौटा दो, वीणा हमारी है।..... भिखारी ने कहा फिर कचरा इकट्ठा होगा, फिर जगह धिरेगी, फिर कोई बच्चा उसके तारों को छेड़ेगा और घर की शान्ति भंग होगी।”

वीणा घर की शान्ति भी भंग कर सकती है यदि बजाना न आता हो। वीणा घर की शान्ति को गहरा भी सकती है यदि बजाना आता हो। जीवन भी एक वीणा है और सब कुछ बजाने पर निर्भर करता है। जीवन हम सबको मिल जाता है लेकिन उस जीवन की वीणा को बजाना बहुत कम लोग सीख पाते हैं इसलिये इतनी उदासी है, इतना दुख है, इतनी पीढ़ी है। शिक्षा का एक ही अर्थ है कि हम जीवन की वीणा को कैसे बजाना सीख ले। दरअसल, ओशो ‘आनन्दवादी’ है। एक स्थान पर वह कहते हैं—‘मेरा संदेश है आनन्द। मेरा संदेश है उत्सव। मैं तुम्हें संसार के प्रति प्रेम से मरना चाहता हूँ।..... नाचो, तो तुम पाओगे उसे। नृत्य में वह करीब से करीब होता है। गुनगुनाओं, गाओं, मैं गीत सीखता हूँ। मैं संगीत सीखता हूँ। मेरा संदेश एक ही है — उत्सव महोत्सव।

इसलिये ओशो के अनुसार शिक्षा की गुणवत्ता का मूल्यांकन इस बात से होगा कि उसे प्राप्त करके व्यक्ति कितना आनंदित होता है। वे कहते हैं एक सम्यक शिक्षा चाहिये जो एक-एक व्यक्ति को आनन्द दे सके, शान्ति दे सके।

क्या वर्तमान शिक्षा यह सब नहीं कर रही है ? इस सम्बन्ध में ओशो कहते हैं — आज अमेरिका सबसे ज्यादा शिक्षित देश है। आज सबसे ज्यादा आदमियों को पागल वही कर पाता है, सबसे ज्यादा। लोग मानसिक रूप से बीमार होते हैं। सच तो यह है कि जिस देश में जितना ज्यादा लोग पागल होते हैं, समझ लेना चाहिये उस देश में उतनी ही ज्यादा शिक्षा फैली है।

श्री रजनीश के शिक्षा सम्बन्धी विचारों का अध्ययन—

वर्तमान शिक्षा का पागलपन से कुछ सम्बन्ध अवश्य है। ज्यादातर मानसिक रोगी काफी पढ़े लिखे लोग होते हैं। आखिर वर्तमान शिक्षा में कमी क्या है। इस सम्बन्ध में ओशो कहते हैं—शिक्षा एक व्यक्ति के भीतर अहंकार की जगती हुई प्यास के अतिरिक्त और कुछ भी पैदा नहीं कर पाती है। विश्वविद्यालय से निकलता है कोई, तो अहंकार से भरी हुई आकाक्षाएं लेकर निकलता है यह होने की वहां पहुंच जाने की।”

हमारी पूरी शिक्षा महत्वाकांक्षा, तुलना और दूसरे से प्रतिस्पर्धा पर खड़ी है। इसका ही यह परिणाम है कि जगत में इतना युद्ध है, इतना वैमनस्य है, इतनी शत्रुता है। इस को एक उदाहरण से समझाते हुए ओशो कहते हैं। अब एक कक्षा में तीस बच्चे हैं। एक बच्चा प्रथम आ जायेगा, उन्तीस बच्चे पीछे रह जायेंगे।..... एक पहला आयेगा, उन्तीस हार जायेंगे। एक जीत जायेगा। जो बच्चे हार रहे हैं, उनके मान को हम सदा के लिये घातक नुकसान पहुंचा रहे हैं क्योंकि उनके मन में सदा इन फिरिआरिटि काम्पलैक्स, हीनता का भाव पैदा हो जायेगा कि हम हार गये। अगर दो-तीन वर्ष एक बच्चा हारता चला गया, तो वह जिन्दगी भर के लिये द्वारा हुआ हो जायेगा।

..... यह शिक्षा बहुत वायलेंट है, हिंसात्मक है। यह बहुत से लोगों को दुखी कर देती है। थोड़े से लोगों को सुखी कर देती है। जिन्हें सुखी कर देती है, नम्बर एक होने का सुख दे देती है, वे पागल हो जाते हैं सदा के लिये। उन्हें सब जगह नम्बर एक होना चाहिये अन्यथा वे जी न सकेंगे। और जिन्हें दो कर देती है। वे सदा के लिये दुखी हो जाते हैं, हारे हुए हार जाते हैं।

एक बात और, जो नम्बर एक हो जाता है उसके बारे में भी यह नहीं कहा जा सकता कि यह आवश्यक रूप से बुद्धिमान है क्योंकि 'हमारा स्कूल सिवाय स्मृति के परीक्षा में और कुछ भी नहीं जाँच पाता है।..... स्मृति का अच्छा होना बुद्धि के अच्छे होने का जयरी लक्षण नहीं है।..... अक्सर बहुत अच्छी स्मृति वाले लोग बहुत गहरी बुद्धि वाले लोग नहीं होते क्योंकि स्मृति बिल्कुल मैकेनिकल है, यांत्रिक है और बुद्धि बड़ी और बात है। स्मृति अतीत से सम्बन्धित है और बुद्धि भविष्य से। स्मृति उससे सम्बन्धित है जो ज्ञात है और बुद्धि उससे सम्बन्धित होती है जो अज्ञात है, अनमोल है। स्मृति सिर्फ पंडित बना सकती है ज्ञानी नहीं इस अर्थ में शिक्षित आदमी बहुत कम रह जायेगे। असल में हम पंडित आदमी को शिक्षित कहने की भूल कर लेते हैं जो पढ़ लिख लेता है, उसे हम शिक्षित कह देते हैं। पढ़ने लिखने से शिक्षा का कोई (खास)सम्बन्ध नहीं है।..... यह हो सकता है कि बुद्ध और महावीर अगर हमारे साथ मैट्रिक की परीक्षा भी जीत पाये, यह कोई पक्का नहीं है।”

अब तक इस बात पर विचार हुआ कि ओशो के अनुसार शिक्षा का क्या अर्थ है तथा वर्तमान शिक्षा की खामिया क्या है। अब इस प्रश्न पर विचार किया जायेगा कि ओशो की 'सम्यक शिक्षा की संकल्पना' क्या है ?

ओशो की सम्यक शिक्षा की संकल्पना से आशय है एक ऐसी शिक्षा जो प्रत्येक व्यक्ति को आनन्द दे सके, शान्ति दे सके।

इसके लिये ओशो ने तीन बातें कहीं हैं। उन्हें ओशो के शिक्षा सम्बन्धी विचारों का सैद्धान्तिक पक्ष कह सकते हैं। वे हैं—ओशो के ही शब्दों में, “एक तो नाम एंबिशस माइंड, गैर महत्वाकांक्षी चित्त पैदा करना पड़ेगा। दूसरा एक ऐसा चित्त जो तुलना नहीं करता। और तीसरा, एक ऐसा व्यक्ति जो अपने को स्वीकार करता है, वह जैसा है।

यहाँ महत्वाकांक्षा से मतलब है नम्बर एक होने का भाव। ओशो कहते हैं, “महत्वाकांक्षा एक तरह की बीमारी है, जो हम सबके प्राणी को घेर लेती है और अब तक की सारी शिक्षा महत्वाकांक्षा के ज्वर पर खड़ी है। मां बाप भी वह जहर देते हैं, शिक्षक भी वह जहर देते हैं।..... वह हर आदमी को सिखाते हैं कि नम्बर एक होना है, तो ही जिन्दगी में सुख है। महत्वाकांक्षा का सम्बन्ध भविष्य से है। भविष्य में ये हो जाये या वो हो जाये, ये जो भाव है यही महत्वाकांक्षा है। पूरी शिक्षा इसी महत्वाकांक्षा को और बढ़ाने में लगी है। ओशो कहते हैं— कोई पच्चीस साल की जिन्दगी शिक्षा में व्यय कर देता है और तब अचानक पाता है कि उसके पास कुछ भी नहीं है जरूर कहीं कोई भूल हो रही है। और पहली भूल तो यह हो रही है कि हम भविष्य की आशाओं को सिखा रहे हैं, वर्तमान के सत्य को नहीं। भूल यह हो रही है कि हम महत्वाकांक्षी में जीने की प्रेरणा दे रहे हैं।

तुलना, महत्वाकांक्षा का ही दूसरा रूप है अभी हमारी पूरी शिक्षा कम्पैरिजिन, तुलना पर चलती है। जैसे बाप अपने बेटे से कहता है, पड़ोसी के बेटे को देख रहे हो कितने नम्बर आ रहे हैं उसके और तुम्हारी क्या हालत होती जा रही है।

बाप सोचता है कि वह बेटे से प्रेम कर रहा है लेकिन उसे नहीं मालूम कि वह उस बच्चे में आग भर रहा है, जहर भर रहा है। ओशो कहते हैं क्या ऐसा नहीं हो सकता कि हम कम्पैरिजिन की शिक्षा को अलग ही कर दें..... इसकी कोई जरूरत नहीं है कि तुलना करे एक व्यक्ति की दूसरे व्यक्ति की दूसरे व्यक्ति से।..... मेरे हाथ के अंगूठे पर जो निशान है वह दुनिया में किसी दूसरे अंगूठे पर नहीं है।..... जब अंगूठे तक भिन्न भिन्न है तो व्यक्तित्व तो बहुत

भिन्न भिन्न है। एक आदमी अपने ढंग का अनूठा है, अद्वितीय है। एक ऐसी शिक्षा चाहिये जो एक एक व्यक्ति को यूनिक होने का बोध दे सके। जो यह बोध दे सके हर व्यक्ति अद्वितीय है, दूसरे से तुलना की कोई जरूरत नहीं है। तब इस जमीन पर ज्यादा सौन्दर्य, ज्यादा आनन्द संभव हो सकेगा।”

तीसरा बिन्दू है – एक ऐसा व्यक्ति जो अपने को स्वीकार करता है, वह जैसा है।

यह बिन्दू जहाँ एक और व्यक्ति की स्वतन्त्रता को महत्व देता है वही व्यक्तिगत भेदों को भी महत्व देता है। यह क्रिया दो तरह से चलती है। एक हमारी जो भी शिक्षा है वह किसी अन्य के बारे में सूचनाएं हैं। जैसे राम से सम्बन्धित पाठ या मोहम्मद से सम्बन्धित पाठ आदि। इनका स्वाभाविक परिणाम ये होता है कि इनसे उनके जैसा होने की प्रेरणा मिलती है। हम स्वयं अपने आपको नकार देते हैं और इनके जैसा होने की कोशिश करते हैं जो खतरनाक है। क्योंकि हम वहीं बन सकते हैं जो हम हैं। कुछ और होने की कोशिश में हम वह भी नहीं बन पायेंगे जो बनना हमारा अधिकार था। इस सम्बन्ध में ओशो कहते हैं—“अब तक कोई बन सका है किसी जैसा ? कितने हजार साल हो गये कृष्ण को मरे ? राम को गये हुये कितने दिन हो गये ? अब तक कोई राम तो नहीं बन सका। रामलीला के राम बन सकते हैं अगर कोशिश करे तो। सब कोशिश नकली आदमी पैदा करवा देती है। असली तो सिर्फ मैं ‘मैं’ ही बन सकता हूँ।

दूसरे ये कि, शिक्षा, शिक्षक और तमाम तरह के जो शैक्षिक इन्तजाम हैं वे भी हमें कोई और ही बनाने का प्रयास करते हैं। ओशो कहते हैं – “हमारी कोशिश यही है कि एक जैसे आदमी हम ढाल दे। सब आदमी एक जैसे हो जाये।

.. आदमी साँचों में नहीं ढाला जा सकता। आदमी मशीन नहीं है। फोर्ड की कारें एक जैसी हो सकती हैं। लाखों कारें एक जैसी हो सकती हैं लेकिन आदमी एक जैसा नहीं हो सकता है। लेकिन यह कोशिश आदमी को मिटाने की कोशिश है। अपनी ‘सम्यक शिक्षा की संकल्पना’ को सार रूप में ओशो इस प्रकार कहते हैं – ‘शिक्षा का एक मात्र लक्ष्य होना चाहिये कि हम प्रत्येक व्यक्ति को उसकी नियति का उद्घाटन करा दें। हम उसे उद्घाटन करा दें कि वह क्या हो सकता है और वह जो सकता है उसके होने के लिये उपकरण जुटा दें। और वह जो हो सकता है उसके होने के लिये सुविधा जुटा दें। एक बीज को हम डाल देते हैं, फिर खाद डाल देते हैं, फिर पानी डाल देते हैं। फिर बीज से अंकुर निकल आता है। बस, शिक्षा अंकुरण बननी चाहिये, आरोपण नहीं..... तो हम एक ऐसा आदमी पैदा कर सकेंगे, जो सुखी है।”

निष्कर्ष—

संक्षेप में, ओशो के अनुसार शिक्षा का अर्थ है जीवन जीने की कला। ओशो वर्तमान शिक्षा को मनुष्य के लिये घातक मानते हैं। क्योंकि यह शिक्षा महत्वाकांक्षा, तुलना एवं प्रतिस्पर्धा पर खड़ी है, जो विषाद, पीड़ा, और शत्रुता पैदा करती है। ओशो वर्तमान शिक्षा की आलोचना ही नहीं करते बल्कि ‘सम्यक शिक्षा की संकल्पना’ भी रखते हैं। इसके तीन महत्वपूर्ण अंग हैं एक महत्वाकांक्षा रहित मन का विकास करना। दूसरा व्यक्ति की किसी अन्य व्यक्ति से तुलना न करना और तीसरा व्यक्तित्व की भिन्नता को स्वीकार करना। ओशो के अनुसार अगर ऐसी शिक्षा होगी तो हम ऐसा आदमी पैदा कर सकेंगे। जो सुखी होगा, शान्त होगा, आनन्दित होगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची—

1. कामाख्या कुमार (2009). “योग चिकित्सा संदर्शिका” युगान्तर चेतना प्रेस, शान्ति कुंज हरिद्वार
2. कुमार शान्ता (1992) धरती है बलिदान की हिन्दी साहित्य सदन, नई दिल्ली
3. सिंह कृपाल (2005) मौत का भेद चण्डीगढ़ सत्संग सोसाइटी, चण्डीगढ़
4. नित्यानन्द स्वामी (2000) श्री गुरु गीता गीता प्रेस, गोरखपुर
5. खेडा शिव (2000) जीत आपकी, फूल सर्कल पब्लिशिंग, नई दिल्ली
6. पाण्डेय रामशक्ल (2012) उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक अग्रवाल प्रकाशन संजय पैलेस, आगरा
7. श्री वास्तव एस0 एस0 एल0 (2001) शैक्षिक उत्कृष्टता अग्रवाल प्रकाशन, आगरा
8. शर्मा राम विलास (1995) विप्लव बेला, भारत भारती प्रकाशन, मेरठ
9. पतंजलि (1990). “योग दर्शन” गीता प्रेस, गोरखपुर पब्लिकेशन्स।
10. स्वामी रामदेव (2008). “योग साधना एवं योग चिकित्सा रहस्य” साईं सिक्थोरिटी प्रिंटर्स प्रा0 लिमिटेड, फरीदाबाद, हरियाणा
11. डा0 सिंह गया (2013) उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक आर लाल बुक डिपो बेगम ब्रिज मेरठ
12. अलेकजेन्डर एफ0 जे0 (1984) “समाधि के सोपान” . ट्रायो प्रोसेस कोलकत्ता
13. लाल बिहारी रमन (2012) : शैक्षिक चिन्तन एवं प्रयोग आर0 लाल0 बुक डिपो बेगम ब्रिज, मेरठ